1) इह धन अखुट न निखुटै न जाइ । पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ । अपुने सतिगुर कउ सद बल जाई । गुर किरपा ते हरि मंन वसाई ।

अर्थ:- हे भाई ! ये नाम-खजाना कभी खत्म होने वाला नहीं, ना ही ये (खर्चने से) समाप्त होता है, ना ये गायब होता है । (इस धन की ये महानता मुझे) पूरे गुरु(शब्द) ने दिखा दी है । (हे भाई!) मैं अपने गुरु से

सदके जाता हूं, गुरु की कृपा से परमात्मा (का नाम-धन अपने) मन में बसाता हूँ ।

से धनवंत हरि नाम लिव लाइ । गुर पूरै हरि धन परगासिआ हरि किरपा ते वसै मन आइ ।

अर्थ:- (हे भाई ! जिस मनुष्यों के हृदय में) पूरे गुरु ने परमात्मा के नाम का धन प्रगट कर दिया, वह मनुष्य परमात्मा के नाम में तवज्जो जोड़ के (आत्मिक जीवन के) शाह बन गए । हे भाई! ये नाम-धन परमात्मा की कृपा से मन में आ के बसता है ।

अवगुण काट गुण रिदै समाइ । पूरे गुर कै सहज सुभाइ । पूरे गुर की साची बाणी । सुख मन अंतर सहज समाणी ।

अर्थ:- (हे भाई ! गुरु की शरण आए मनुष्य के) अवगुण दूर करके परमात्मा की महिमा (उसके) हृदय में बसा देता है । (हे भाई!) पूरे गुरु की (उचारी हुई) सदा-स्थिर प्रभु की महिमा वाली वाणी (मनुष्य के) मन में आत्मिक हुलारे पैदा करती है । (इस वाणी की इनायत से) आत्मिक अडोलता में समाई हुई रहती है ।

एक अचरज जन देखह भाई । दुबिधा मार हरि मंन वसाई । नाम अमोलक न पाइआ जाइ । गुर परसाद वसै मन आइ ।

अर्थ:- हे भाई जनो ! एक हैरान करने वाला तमाशा देखो । (गुरु मनुष्य के अंदर से) तेर-मेर हटा के परमात्मा (का नाम उसके) मन में बसा देता है । हे भाई ! परमात्मा का नाम अमोलक है, (किसी भी दुनियावी कीमत से) नहीं मिल सकता। (हाँ,) गुरु की कृपा से मन में आ बसता है।

सभ मह वसै प्रभ एको सोइ । गुरमती घट परगट होइ । सहजे जिन प्रभ जाण पछाणिआ । नानक नाम मिलै मन मानिआ । (663)

अर्थः- (हे भाई ! चाहे) परमात्मा खुद ही सबमें बसता है, (पर) गुरु की मति पर चलने से ही (मनुष्य के) हृदय में प्रकट होता है । हे नानक ! आत्मिक अडोलता में टिक के जिस मनुष्य ने प्रभु के साथ गहरी साझ डाल के (उसको अपने अंदर बसता) पहचान लिया है, उसे परमात्मा का नाम (सदा के लिए) प्राप्त हो जाता है, उसका मन (परमात्मा की याद में) पतीजा रहता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)